शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण समाज की झलक

डॉ.श्रीमती रशीदा खान
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कहानी का संबंध मनुष्य की अनुभूतियों से है। मनुष्य सुखात्मक घटनाओं की अनुभूतियों को अपने अन्तर्मन एवं स्मृति से सहेज कर रखता है। कहानी जीवन की कहानी कहती है। मनुष्य की दुखद अनुभूति ही कहानी बनकर सामने आती है। प्रेमचंद एक उच्च कोटि के कलाकार थे। लिखने का उन्हें व्यसन था। उपन्यास, कहानी, नाटक तथा जीवनियाँ इत्यादि साहित्य की विधाओं में लिखकर उन्होंने हिन्दी के साहित्य भण्डार को भरा, तथा हिन्दी कहानी को सामाजिकता दी। उनकी कहानियों में ग्रामीण, शहरी, शिक्षित, अशिक्षित, पूँजीपति सर्वहारा वर्ग के समाज के चित्र मिलते हैं। जनवादी कहानी परम्परा को समृद्ध और विकसित करने वाले रचनाकार के रूप में प्रेमचंद अग्रगण्य हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रेमचंद की कहानियों में ग्रामीण जीवन का अवलोकन किया गया है

भूमिका

जीवन के पथरीले और कण्टकपूर्ण ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर चलते हुए प्रेमचंद अपने हृदय का साथ लिये निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे। निर्धनता के कारण उन्हें महाजनों से उधार लेना पड़ता था। उस समय गाँव-गाँव में महाजनों की तूती बोलती थी। इसी रूपये के बल पर वे गरीबों का खून चूसते और अत्याचार करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेमचंद ने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर ही महाजनों का चित्रण अपने साहित्य में किया है। 1901 से प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक सफर शुरू किया। वे अपने समय के सभी प्रगतिशील विचारों के समर्थक थे और उनकी सूक्ष्म दृष्टि सामाजिक , धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों तक व्याप्त थी।

कहानीकार प्रेमचंद - प्रेमचंद उपन्यास के क्षेत्र में जितने महान थे कहानी के क्षेत्र में उससे कहीं अधिक महान । वे सत्य का अनुसरण करने वाले कलाकार थे तथा मानवता के कट्टर समर्थक थे। उनके साहित्य की विशेषता यह है कि उसका आनंद केवल भारतवासी ही नहीं मानव मात्र भी उठा सकता है। प्रेमचंद मानवता के उपासक थे। वे मन की भीतरी तहों में छिपी हुई मानवता को प्रकाशित करने की कुशलता रखते थे। उनकी कहानियों में दैनिक जीवन का चित्रण और ग्रामीण वातावरण का भव्य रूप प्रस्तुत हुआ है। उन्होंने समस्त जनता, किसान, मजदूर आदि का सफल चित्रण किया है। उनकी कहानियों में जमींदार, पूँजीपति, विद्वान, मूर्ख, किसान, मजदूर, नारी आदि के चित्र दिखाई देते हैं। उनकी कहानियाँ राष्ट्रीयता और आदर्श से ओत-प्रोत हैं। उनमें रमणीयता और सूक्ष्म पर्यवेक्षण मिलता है। उदाहरणार्थ 'फाल्गुन का महीना था । अबीर और गुलाल से जमीन लाल हो रही थी। कामदेव का प्रभाव लोगों को भड़का रहा था। रबी ने खेतों में सुनहरा फर्श बिछा रखा था और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

खलियानों में सुनहरे महल उठा दिये गये थे। ' यहां भाषिक सौंदर्य अपनी सम्पूर्णता लिये हुए है। प्रेमचंद के शब्दों, में - "हल्कू ने आकर स्त्री से कहा, सहना आया है , लाओ जो रूपये रखे हैं , उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर से धौंस। हल्कू ने रूपये लिये और इस तरह बाहर चला , मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काट कर तीन रूपये कम्बल के लिये जमा किये थे। वह आज निकले जा रहे थे। एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था। "पूस की ठिठुराती रात में किसान कैसे अपना खेत बचाकर रखते हैं या खुद को - "पूस की अंधेरी रात, आकाश पर तारे ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढे की चादर ओढ़े पड़ा काँप रहा था। " वह पूस की रात किस तरह बिताता है इसका वर्णन प्रेमचंद ने बड़ी स्वाभाविकता से किया है।

नमक का दारोगा - नमक का दारोगा में भारतीय सामाजिक सांप्रदायिक भेदभाव युक्त सहजीवन की मूल्य चेतना को अभिव्यक्त किया गया है। इस कहानी में जिन वास्तविकताओं को सामने लाया गया है, वे न केवल सरकारी महकमों को लपेटती है, बल्कि सामाजिक मूल्यों के रूप में भी प्रतिष्ठित हो जाती है। प्रेमचंद में समाज और उसकी आन्तरिक संरचना की गहरी पहचान थी। 'ठाकुर का कुआँ' में प्रेमचंद ने उच्च वर्ग, निम्न वर्ग, साम्प्रदायिकता, ऊँच-नीच में भेदभाव को उजागर किया गया है। ठाकुर के कुएँ से पानी लाने की बिसात निम्न वर्ग में नहीं। रात -दिन पानी पर पहरा। कहानी का पात्र 'जोखू' है जो अस्वस्थ है। पानी में बदबू है। ऐसे समय स्त्री में इतना साहस नहीं कि वह अपने पति के लिए ठाकुर के कुएँ से पानी ले आये। ऐसे समय का चित्रण प्रेमचंद ने शब्दों में कुछ इस तरह किया है, "ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा। दूर से लोग डांट भगायेंगे। साहू का कुआँ गाँव के इस सिरे पर है, परन्तु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा ? कोई कुआँ गाँव में है नहीं।

हाथ-पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे , ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कन्धा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे ?"

मंत्र कहानी में जहाँ जीवन का यथार्थ ऊँच-नीच का भेदभाव है वहीं पुराने और नये के व्यवहार पर कहानीकार एक कटाक्ष भी कर देता है एक बूढा ग्रामीण अपने छः बेटों में से पांच को गंवा देता है अंतिम पुत्र जिंदगी और मौत से लड़ रहा है। बूढ़ा डॉ. चडढा से उसके पुत्र को बचाने की गुहार लगाता है किन्तु डॉ. का समय गोल्फ खेलने जाने का है वह उसके पुत्र को देखने से इंकार कर देता है। बूढ़ा डॉक्टर के कदमों में अपनी पगड़ी रख देता है तब भी डॉक्टर सुनता नहीं। उसका बेटा शांत हो जाता है।

कुछ सालों बाद डॉक्टर. पुत्र सर्पदंश के कारण मरणासन्न अवस्था में है। जैसे ही बूढ़े को पता चलता है वह अपने आप को रोक नहीं पाता। वह ऐसी तेज गति से चलता है मानो मौत उसका पीछा कर रही हो। डॉक्टर पुत्र को देखकर वह मंत्रोच्चारण करने लगता है। बूढ़े के मंत्रोच्चारण से डॉक्टर का पुत्र सामान्य होने लगता है। जैसे ही सामान्य होकर वह आँखें खोलता है बूढ़ा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अपने कर्तव्य पालन के पश्चात तुरंत घर पहुंच जाता है।

जिन्दगी के इस यथार्थ को प्रेमचंद ने अपनी कहानी के माध्यम से बताया है। 'कफन' कहानी एक ऐसे सर्वहारा वर्ग का चित्रण करती है जिसमें घीसू और माधू बेसहारा लाचार जीवन जीते हैं । दोनों का साहचर्य उन्हें जीने की कला सिखाता है। घर में पुत्रवधु प्रसव पीड़ा से व्याकुल है , पीड़िता की मृत्यु हो जाती है। अब दाह संस्कार के लिये जमींदार उनकी सहायता करता है किन्तु हाथ में धन आ जाने के कारण अपने कर्तव्यबोध से ऊपर उठकर अच्छा भोजन करने की लालसा लिये किसी भोजनालय में जाकर अच्छा भोजन करते हैं और नशा भी करते हैं । किसी को भोजन दान कर खुश भी होते हैं और कहते हैं - देने का सुख क्या होता है ये आज जाना और नशे में गाते हैं 'ठगिनां क्यों नैना झमकाये।"

अन्ततः प्रेमचंद जीवन और उसकी समस्याओं की ओर संकेत मात्र करते ही नहीं अपितु उन समस्याओं को दूर करने का प्रयास भी करते हैं। यही कारण है कि उन्होंने मानव जीवन को कलुषित करने वाले हाहाकारमय भीषण रौरव का वर्णन भी किया है , इतना नहीं कि उसके पीछे स्वर्ग का संदेश देने वाले आशा के कण से वे तृप्त हो जायें। उन्होंने यथार्थ का सुंदर समन्वय किया है। एक ओर जहाँ वह समाज के नारकीय कीड़ों की छीछालेदार करते हैं, वहीं वह समाज के नवयुग का संदेश देने वालों को भी नहीं भूलते । इस प्रकार यथार्थ और आदर्श के सुंदर समन्वय में उन्होंने एक सच्चे कलाकार का परिचय दया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य कोश - संपादक धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 356
2. आधुनिक निबंध - रामप्रसाद किचलू पृष्ठ 114
3. हिन्दी कथा साहित्य - पृष्ठ 65
4. निबंध रत्नाकर - रीगल बुक डिपो पृष्ठ 22
5. हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ - ओशो प्रकाशनख् पृष्ठ 648